International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 70-72

तुलसीदास का भाषा–वैदुष्य एवं भाषावैज्ञानिक तथ्य

सत्यभामा राज़दान
प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, संस्कृत विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर, भारत।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य आकाश के परम दीप्तिमान नक्षत्र, भक्ति काल की सगुण धारा की रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि गोस्वामी तुलसीदास एक साथ कवि, भक्त तथा समाज सुधारक इन तीनों रूपों में मान्य हैं। संवत् 1558 में उत्तर प्रदेश में बॉदा ज़िले के तत्कालीन राजपुर नामक ग्राम निवासी आत्माराम एवं हुलसी ब्राह्मण दम्पति के घर जन्में तुलसीदास जी का विवाह दीनबन्धु पाठक की सुपुत्री रत्नावली से हुआ था। अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम के कारण तुलसी को रत्नावली की यह फटकार ''लाज न आई आपको दौरे आएहु नाथ'' तथा

''धिग धिग धिग तोहिं प्राणपियारे, चाम हाड अति निरस हमारे।
ऐसो मन जो लागत रामै, तो सुधरत तिहरे सब कामै ''

सुननी पडी जिससे इनके मन में वैराग्य उत्पन्न होकर इनका जीवन ही परिवर्तित हो गया। तत्पश्चात् इनका अधिकांश जीवन राजपुर (वर्तमान चित्रकूट), अयोध्या (वर्तमान अवध) तथा काशी में बीता एवंच ''संवत सोलह सौ असी, असी गंग के तीर। श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर।।'' के अनुसार संवत 1680 में इनका परलोक गमन हुआ।

यों तो तुलसीदास की अब तक तीन दर्जन से अधिक रचनाओं की ओर संकेत मिलता है जबकि नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित तुलसीदास के ग्रन्थों की संख्या 23 है। परन्तु उनमें बारह ही प्रामाणिक माने गए हैं जिनमें दोहावली, कवितावली, गीतावली, कृष्णगीतावली, विनयपत्रिका श्रेष्ठ ग्रन्थ हैं जबकि 'रामचरितमानस' इनकी श्रेष्ठतम रचना है। इस ग्रन्थ का अनुवाद भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त आंगल, ड़च, जर्मन, स्पेनिश, चीनी तथा फ़ारसी जैसी विदेशी भाषाओं में भी हुआ है। परन्तु इस बात का खेद भी है कि भारत के जम्मू व कश्मीर राज्य के तीन प्रदेशों जम्मू, कश्मीर तथा लद्दाख में क्रमशः बोली जाने वाली तीन भाषाओं, ड़ोगरी, कश्मीरी तथा लद्दाखी में से किसी भी भाषा में आज तक इस विश्व–ग्रन्थ का अनुवाद नहीं हो पाया है। इस महाकाव्य की गणना विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय काव्यों में 46वें स्थान पर होती है एवंच इस ग्रन्थ की लोकप्रियता के कारण ही तुलसीदास की रचनाओं के विषय में यह आर्षवाणी प्रचलित है –

पश्य देवस्य काव्यं, न मृणोति न जीर्यति।

यहां पर भाषा की दृष्टि से तुलसीदास का अध्ययन करने का प्रयास मुख्यरूप से इसी ग्रन्थ के आधार पर किया गया है।

भाष् भाषणे अर्थ में 'अ' प्रत्यय के योग से निष्पन्न भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। परन्तु अभिव्यक्ति के स्तर के अनुरूप भाषा का चयन करना काव्य–प्रतिभा की अपेक्षा रखता है। तुलसीदास के समय साहित्यिक रूप से ब्रज तथा अवधी, ये दोनों ही भाषाएं प्रतिष्ठित थीं। यह वह समय था जब 'हिन्दी' अभी साहित्यिक भाषा के रूपमें विकसित नहीं हुई थी। अवधी उत्तरी भारत के अधिकांश क्षेत्रों में लोकभाषा के रूप में प्रचलित तो थी ही साथ ही साथ हिन्दी की यह उपजाति पौराणिक महाकाव्य की रचना के लिए भाव और अभिव्यक्ति में समन्वय स्थापित करने की दृष्टि से पूर्णतया सक्षम थी जिसके प्रमाण मानस से पुर्व रचित ग्रन्थ जैसे चौदहवीं शती ईस्वी (1379 A.D) का मौलाना दाऊद रचित प्रेमाख्यान काव्य 'चंदायन', तथा सोलहवीं शती के पुर्वाद्ध (1540 A.D) का मल्लिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' हैं। संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान एवंच ब्रज तथा अवधी, इन दोनों क्षेत्रीय भाषाओं में समान रूपेण निष्णात होने पर भी कवि ने रामचरितमानस जैसे महाकाव्य की रचना के लिए प्रमुखतः अवधी भाषा का चयन किया। इस का मुख्य कारण यह है कि जनसाधारण को सर्वोपरि मानने वाले तुलसीदास रामकथा को संस्कृत विद्वत्मण्डली की अपेक्षा जनसाधारण में प्रचलित करने के इच्छुक थे। अतएव उन्होंने अपनी रचनाओं के लिए इसी ग्राम्य–गिरा को प्राथमिकता दी।वस्तुतः इस उपभाषा के लिए भाषा (भाखा) शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम तुलसीदास ने ही किया। रामचरितमानस की भाषा ने तो अवधी को स्थायी साहित्यिक भाषा का महत्व प्रदान किया। परन्तु यह भी सत्य है कि तुलसीदास की दृष्टि में भाषा तो भावाभिव्यक्ति का साधन मात्र है। साध्य तो मन का प्रबोधन है; यथाः–

तदपि कही गुरु बारहिबारा, समुझ परी कछु मति अनुसारा।
भाषा बंध करत मैं सोई, मोरे मन प्रबोध जेहि होई।।
1/39/1–2

डॉ0 केल्लॉग अपनी पुसतक 'A Grammar of the Hindi Language – Ist edition, London 1898' में प्राचीन साहित्यिक भाषा के लिए पूरबी शब्द तथा इसके आधुनिक रूप के लिए अवधी का प्रयोग करते हैं जो उचित नहीं है क्योंकि गठन की दृष्टि से मानस की भाषा 'पद्मावत' की ठेठ अवधी न होकर इसके उस रूप को दर्शाती है जिसमें अवधी के साथ विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं तथा उपभाषाओं के शब्दों एवं पदों का सहज संमिश्रण किया गया है जो कवि के काव्य–कौशल तथा भाषा–वैदुष्य की समन्वित प्रतिभा का परिचायक है। भाषा–चयन के विषय में तुलसीदास जी का कथन हैः–

का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिए सांच।
काम जु आवै कामरी, का लै करै कुमांच।।

तथाः–

सरल कवित कीरति विमल, सोइ आदरहिं सुजान।
सहज बैर विसराय रिपु, जो सुनि करिहिं बखान।। 1/19

पुनश्चः–

कीरति भणित भूति भलि सोई, सुरसरि सम सबकर हित होई।
राम सुकीरति भणित भदेशा, असमंजस अस मोहिं अंदेशा।।
1/18/9–10

तुलसीदास असाधारण प्रतिभा के धनी थे। अवधी तो उनकी मातृभाषा थी ही परन्तु साथ ही उन्होंने अवधी की प्रवृत्ति के अनुरूप न केवल उसकी विभिन्न सजातीय उपभाषाओं के शब्द समूह अथवा पदसमूह का ही चयन करके उनका अवधी शैली के साथ समन्वय सूत्र स्थापित किया है अपितु भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा में श्लोक रचना को अवधी पद्यरचना के साथ इस प्रकार समन्वित किया है मानो किसी सुन्दर स्वर्णाभूषण में रत्न जड़े हों जो उस आभूषण की सुन्दरता में वृद्धि तो करते ही हैं परन्तु अन्ततः उसकी रचना में पूरक सिद्ध होते हैं। रामचरितमानस में अवधी के साथ संस्कृत श्लोकों की इसी प्रकार की व्यवस्था है जो कवि के उत्कृष्ट काव्य कौशल के साथ– साथ साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त शब्दों की व्यवस्था करने की उनकी अपूर्व प्रतिभा को भी प्रमाणित करता है।

भाषा की व्यवस्था में कवि ने प्रत्येक काण्ड़ के प्रारम्भ में कई श्लोकों पर आधारित मंगलाचरण में संस्कृत तथा अवधी, दोनों भाषाओं का प्रयोग किया है, जैसे बालकाण्ड़ के मंगलाचरण के 'वर्णानामर्थसंघानां रसानां छंदसामपि। मंगलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।।' से लेकर आरम्भ के सात श्लोक संस्कृत में हैं जबकि उसके आगे के मंगलाचरण के चार पद्य 'जेहि सुमिरत सिधि होय, गणनायक करिवरवदन। करहु अनुग्रह सोय, बुद्धिराशि शुभगुणसदन।।' सोरठा छन्द में हैं। इसी प्रकार अयोध्याकाण्ड़ के आरम्भ के तीन श्लोक 'वामांगे च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके, भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरस्य व्यालराट्। सोऽयं भूति विभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा, शर्वः सर्वगतः शिवःशशिनिभः श्रीशंकरः पातु माम्।।' आदि संस्कृत में हैं जबकि उसके आगे मंगलाचरण का ही एक पद्य 'श्री गुरुचरण सरोजरज निज मन मुकुर सुधारि। वर्णहुँ रघुवर विशद यश जो दायक फलचारि।।' दोहा छन्द में है। इसी प्रकार कहीं कहीं सोपान के मध्य में भी संस्कृत के श्लोक होने के अतिरिक्त प्रत्येक सोपान का समाप्तिसूचक वाक्य भी संस्कृत में है, यथाः–

इति श्रीमद् रामचरितमानसे सकल कलि कलुषविध्वंसने प्रथमः
सोपानः समाप्तः।

जहां तक सजातीय भाषाओं से ग्रहीत शब्दों का सम्बन्ध है, इन भाषाओं में सबसे अधिक शब्द ब्रज भाषा के हैं। परन्तु, व्यापक रूप से देखें तो मानस में सजातीय भाषाओं में ब्रज के साथ बुंदेली तथा भोजपुरी जैसी लोकभाषाओं के अतिरिक्त फ़ारसी भाषा से भी शब्दों का चयन किया गया है। विजातीय भाषाओं में अरबी भाषा की ओर संकेत किया जा सकता है।

यहां पर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि कवि ने अवधि के साथ जिन सजातीय अथवा विजातीय भाषाओं से शब्दों का सहज संमिश्रण किया है भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से उनकी भारतीय भाषाओं में क्या स्थिति है? क्या यह कवि का संकल्पित प्रयास था अथवा ऐसे शब्द एवं पद तत्कालीन जनभाषा में प्रचलित होने के कारण कवि की वाणी से स्वतः निःसृत हैं? यह तो गहन अन्वेषण का विषय है तथा इन चन्द पन्नों में इस का विश्लेषण करना असम्भव है। अतः यहां विस्तार की सीमा को ध्यान में रखते हुए आधुनिक भारतीय भाषाओं के इतिहास की दृष्टि से भाषा वैज्ञानिक तथ्य को अति संक्षिप्त रूप में विद्वत् जनों के समक्ष रखने का प्रयास कर रही हूँ।

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से भारोपीय भाषा परिवार की भारतीय आर्यभाषा शाखा में अवधी सबसे विकसित एवं लोकप्रिय भाषा है। 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में अवधी भाषा–भाषियों की संख्या पच्चीस लाख तीस हज़ार है जबकि पूरे विश्व में इसके बोलने वालों की संख्या तीस लाख बावन हज़ार है जिनमें तीस लाख बत्तीस हज़ार लोगों की यह L1 (प्रथम भाषा) हैं जबकि शेष बीस हज़ार भाषी L2 (द्वितीय भाषा) के रूप में इसका प्रयोग करते हैं। यों तो यह प्रमुख रूप से पूर्वी–उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र की भाषा है परन्तु अवधी भाषा–भाषी भारत के विभिन्न प्रान्तों जैसे मध्य प्रदेश, दिल्ली, बिहार आदि तथा उत्तर प्रदेश के अधिकांश ज़िलों जैसे कानपुर, लखनऊ, इलहाबाद, रायबरेली, फ़ैज़ाबाद, उन्नाव, श्रावस्ती, बहराइच, अमेठी, बाराबंकी, हरदोई आदि क्षेत्रों तथा नेपाल की तराई में मिलते हैं। अवधी के बाद दूसरा स्थान ब्रज भाषा का आता है। इसका भाषा–क्षेत्र पश्चिमी–उत्तर प्रदेश, आगरा क्षेत्र, सवाइ माधोपुर के ज़िले, हरयाणा, ज़िला गुड़गांव, बिहार, मध्य प्रदेश तथा दिल्ली है। 2001 की जनगणना के अनुसार इसके बोलने वालों की संख्या 5,74,000 है। यह बात ध्यातव्य है कि अवध के दक्षिण में बुंदेली, अवधी और ब्रजभाषा का मिश्रित रूप प्रचलित है।

ऐतिहासिक साक्ष्यों तथा जातिगत विशेषताओं (Ethnologically) के आधार पर अवधी तथा ब्रजभाषा, दोनों की विकास यात्रा अनुमानतः 1000 ई0 संवत से शौरसेनी अपभ्रंश से प्रारम्भ होकर फलतः 1500ई0 संवत् से 1800ई0 संवत् के मध्य हिन्दी की उपभाषा के रूप प्रस्फुटित हुईं। एक ही भाषा परिवार से उद्भूत होने तथा विकास–यात्रा के पथ पर एक समान प्रवृत्ति के साथ आरूढ़ होने की दृष्टि से अवधी के शब्द समाम्नाय का ब्रज भाषा, भोजपुरी, मैथिली, नेपाली तथा हिन्दी के साथ साम्य होना कोई आकस्मिक अथवा अस्वाभाविक घटना नहीं है।

अवधी के अन्तर्वर्ती विभाजन के अन्तर्गत कई बोलियां तथा उपबोलियां सम्मिलित हैं जिनमें गंगापरी, मिर्ज़ापुरी, परदेसी, तथा उत्तरी उपबोलियां आती हैं जो परस्पर बोधगम्य हैं। भारत–ईरानी की संतति होने के फलस्वरूप संस्कृतमूलक एवं देशज शब्दों का बाहुल्य होने के अतिरिक्त इसने फ़ारसी तथा फ़ारसी के माध्यम से आए अरबी के शब्दों को भी अपने में समा लिया है। पुनश्च, इस काल में भक्ति आंदोलन के चरम बिंदु पर पहुँचने के कारण ब्रज तथा अवधी, इन दोनों उपभाषाओं में तत्सम शब्दों का अनुपात बढ़ गया। परन्तु मानस की भाषा व्यवस्था में कृत्रिमता का कहीं भी आभास नहीं होता है। इस का कारण यह है कि इसकी भाषा व्यवस्था में अवांछित शब्दों की भरमार न होकर छन्द, अलंकार तथा शैली की दृष्टि से जनभाषा में प्रचलित संस्कृतमूलक तथा फ़ारसी या अरबी से आगत शब्द अप्रयत्नकृत एवं स्वतः निःसृत है। उदाहरण के लिए पार्वती का सीता के लिए यह आशीश दृष्टव्य हैः

मनजाहि रांचा मिलहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो।
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो।। 1/283/33

इस छन्द में अवधी के साथ ब्रजभाषा के सांवरो, रावरो जैसे पदों का कैसा सहज एवं अविछिन्न विन्यास है। इसी प्रकारः–

का क्षति लाभ जून धनु तोरे, देखा राम नयेके भोरे।

इस पद्य में जून (जीर्ण) शब्द अवधी से भिन्न होकर भी न तो भिन्नता का आभास देता है और न ही अर्थबोध में कोई बाधा होती

है। यहां पर इस बात की ओर संकेत करना आवश्यक है कि मानस की भाषा का अध्ययन करते समय मुझे दो भिन्न सम्पादकों द्वारा संपादित मानस के दो भिन्न संस्करणों का अवलोकन करने का अवसर मिला। इन दोनों संस्करणों में अत्यधिक पाठभेद होने के कारण भाषा का स्वरूप भी बदल गया है जिससे एकाएक सटीक निष्कर्ष पर पहुॅचना कठिन है। उदाहरण के लिए पूर्व वर्णित पद्य के दूसरे पाठ का प्रायः प्रत्येक शब्द न केवल उकारान्त है अपितु प्रयुक्त शब्दों में ध्वनि–भेद भी स्पष्ट है, यथाः–

मनु जाहिं राचेउ मिलहि सोबरु सहज सुन्दर सांवरो।
करुणानिधानु सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।

इसी प्रकार 'का क्षति लाभ जून धनु तोरे' में जून के स्थान पर जीर्ण शब्द का प्रयोग मिलता है।
अवधी के साथ फ़ारसी एवं अरबी शब्दों के सम्मिश्रण का यह उदाहरण देख लीजिएः–

गई बहोरि गरीब निवाजू, सरल सबल साहिब रघुराजू।
बुध वर्णहि हरियश असजानी, करन पुनीत हेतु निज बानी।।1/17/7–8

लोकहु वेद सुसाहब रीती, विनय सुनत पहचानत प्रीती।
गनी गरीब ग्राम नर नागर, पंडित मूढ़ मलीन उजागर।।
1/33/5–6

कितनी रोचक पद रचना है? किस प्रकार कवि ने संस्कृतमूलक शब्दों के साथ अरबी तथा फ़ारसी के शब्दों यहां तक कि सुसाहब जैसे संकरित शब्दों का भी अवधी शैली के साथ समन्वय सूत्र स्थापित किया है। यहां बहोरि शब्द अरबी ब के साथ फ़ारसी हाल के योग से बने बहाल शब्द का विकृत रूप है। इसी प्रकार गरीब और निवाजू शब्द क्रमशः अरबी ग़रीब और फ़ारसी नवाज़ शब्द हैं; गनी शब्द अरबी का ग़नी है तो सुसाहिब संस्कृत सु तथा अरबी साहब के योग से बना संकरित शब्द है।
इन उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कवि का इन सजातीय अथवा विजातीय भाषाओं के शब्दों को अवधी की माला में पिरोना अकस्मात नहीं है अपितु ये तथा इनके जैसे अन्य शब्द तत्कालीन जनभाषा में किसी न किसी रूप में अवश्य प्रचलित रहे होंगे तथा कवि ने अपनी काव्य प्रतिभा से इन शब्दों को अवधी शैली में समन्वित करके अपने भाषा वैदुष्य का परिचय दिया है। यही कारण है कि मानस की भाषा में किसी प्रकार की कृत्रिमता का आभास नहीं होता है अपितु प्रत्येक शब्द, पद्य अथवा पद्यांश नैसर्गिकता के साथ भाषा के निरन्तर प्रवाह में सहायक सिद्ध हुए हैं। संक्षेपतः इन उदाहरणों से यह बात स्पष्ट है कि तुलसीदास का भाषा पर असाधारण अधिकार था। उन्होंने प्रत्येक स्थल पर प्रसंगों, भावों एवं पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग कर अपने प्रतिपाद्य विषय का सजीव एवं हृदयग्राही चित्रण किया है।

सन्दर्भ

1. तुलसीकृत रामचरितमानस : (सम्पादक) आर सी प्रसाद, प्रकाशकः मोतीलाल, बनारसीदास, प्रथम संस्करण 1989।
2. तुलसीकृत रामचरितमानस : (सम्पादक) पं0 विनायक राय, प्रकाशकः वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण 1994।
3. तुलसीकाव्य – नए पुराने डा0 बाबूराम शर्मा, प्रकाशकः वाणी प्रकाशन संदर्भः प्रथम संस्करण 1984।
4. गोस्वामी तुलसीदास जगदीश शर्मा, प्रकाशकः अनमोल प्रिंटर्स, जोधपुर आधुनिक संदर्भ में : प्रथम संस्करण 1995।
5. तुलसी – शास्त्र एवं अवधारणायें प्रो0 हौसिला प्रसाद सिंह, संजय प्रकाशन, 2006।
6. रामचरितमानस का काव्य सौंदर्य डॉ0 चन्द्रकिरण अग्निहोत्री, तक्षशिला प्रकाशन, 2005।
7. तुलसी का विशेषण विधान : डॉ0 राम अंजोर सिंह, सरस्वती प्रकाशन मन्दिर, 1978।
8. तुलसी साहित्य में राजनैतिक – डा0 शीलवती गुप्त, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली 197प विचार